आधुनिक संस्कृत कवि हरिराम आचार्य द्वारा रचित 'संकल्प गीतिः'।

प्रस्तुत कविता में कवि हरिराम आचार्य ने संदेश दिया है कि तुम दीप जलाओ, आगे बढ़ो, अंधकार स्वयं नष्ट हो जायेगा। इसी प्रकार जितनी भी सांसारिक समस्याएँ हैं उनके समाधान के लिये हम संकल्प लेकर आगे बढ़ना चाहिये। इस प्रकार करने से समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जायेगा। दृढ़ संकल्प वाला व्यक्ति हमेशा विजयी होता है। धैर्यपूवक निरन्तर प्रयास करने वाला व्यक्ति कभी असफल नहीं हो सकता।

1. यूयं दीपं प्रज्वालयत - तुम सब दीपक जलाकर जलाओ।

तिमिरं स्वयं गमिश्यति रे- अंधकार(**तिमिर**) अपने आप ही भाग जायेगा(दूर हो जायेगा)।

अमृतचिंतनं निमिषं कुरुत- क्षणभर(**निमिषं**) अमृत का चिन्तन तो करो।

गरलं स्वयं गमिष्यति रे- विष स्वयं समाप्त हो जायेगा।

व्याख्या- प्रस्तुत पद्य में कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि जब दीपक के प्रदीप्त होते ही अंधकार स्वयं चला जाता है और अमृत का चिन्तन मात्र कर लेने से ही विष(जहर) खत्म हो जाता है। ठीक उसी प्रकार मन में संकल्प कर लेने मात्र से ही समस्या का समाधान मिल जाता है। प्रस्तुत कविता का शीर्षक ही **'संकल्पगीतिः'** है।

2. गतिविकला विज्ञान-विजडिता- गति स्फूर्तिहीन है, विज्ञान उदासीन(चेतनाशून्य अथवा गतिहीन है)।

सन्त्रस्ता रोदिति मानवता- मानवता सन्त्रस्त होकर रो रही है (विलाप कर रही है।)।

निर्मितबीजं भूमौ वपत- तुम भूमि में(अर्थात् मानव हृदय में) निर्माण के बीज(अर्थात् मानवता के बीज) तो बोओ(**वपत**)।

सौख्यं स्वयं फलिष्यति रे- सौहार्द्रभाव(मित्रता, सहायता का भाव) स्वयं फलित होगा।

तिमिरं स्वयं गमिष्यति रे- अंधकार(**तिमिर**) अपने आप ही भाग जायेगा(दूर हो जायेगा)।

व्याख्या- प्रस्तुत पद्य से यह अभिप्राय है कि जब कार्यों में गति ही न रहे, विज्ञान भी जब गति हीन हो जाये, जब हाहाकार मची हो, मानवता पिड़ित होकर रो रही हो, तब मनुष्य को अपने हृदय में मानवता रूपी बीज को रोपित करना चाहिये। ताकि जीवन के कठिन समय में एक मनुष्य ही दूसरे मनुष्य के कामा आये।

वर्तमान में जो **'कोरोना वायरस'** की स्थिति है उसमें यह कविता हमें इस स्थिति से निकलने का संकल्प लेने का संदेश दे रही है। इस समय यदि मनुष्य ही मनुष्य की सहायता नही करेगा तो सौहार्द्र भाव कहा' से उत्पन्न होगा।आप सभी current news में देख रहें होंगे कि जो डॉक्टर इस समय अपने कर्तव्य का पालन कर रहें हैं उन्में से कुछ के साथ उनकी सोसाय़टी के लोग गलत व्यवहार कर रहें हैं।

इस समय सारे काम बन्द पड़े हैं, कार्यो में कोई गति नहीं है, विज्ञान भी इस वायरस का तोड़ नही निकाल पा रही है। मनुष्य भी भयभीत स्थिति में हैं। इस स्थिति में जिस प्रकार भारत विकसित देश अमेरिका को दवाई देकर उसकी मदद कर राहा है यह मानवता का ही एक उदाहरण है।

कहने का तात्पर्य यह है कि स्थिति कोई भी हो लेकिन मनुष्य को अपने हृदय में मानवत रूपी बीज का वपन करना चाहिये। जिससे कठिन परिस्थिति रूपी अंधकार को दूर किया जा सके।

3. **स्वपनो यस्य यथा शत्रुघ्नः –** जब शत्रुओं और बाधाओं(शत्रु+विघ्न) को दूर करने का सपना हो।

किं हि तस्य कर्त्ता पथविघ्नः ?- पथ की बाधाएँ(**पथविघ्नः**) भला क्या करेंगी?(कबतक रास्ता रोकेंगी)।

पथि यूयं चरणं स्थापयत- तुम उस रास्ते(**पथि**) पर चल तो चल तो पड़ो।

लक्ष्यं स्वयमायास्यति रे- लक्ष्य स्वयं पास आएगा।

तिमिरं स्वयं गमिष्यति रे ।- अंधकार(**तिमिर**) अपने आप ही भाग जायेगा(दूर हो जायेगा)।

व्याख्या- कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि जब अपने लक्ष्यों और सपनों को पूरा करने हेतु तत्पर हो जायेंगे तो मानो सफलता स्वयं पास आयेगी। जब बाधाओं को दुर करने का सपना देख लिया हो तो पथ की बाधाएँ कुछ नहीं कर सकती। मनुष्य को प्रत्येक कार्य करने के लिये संकल्प लेना चाहिये। संकल्प लेने से लक्ष्य तक पहुँचा जा सकता है।

4. **संकल्पस्य न कोऽपि विकल्पः –** संकल्प का कोई विकल्प नहीं होता।

हठयोगीव भवति संकल्पः – हठयोगी के समान दृढ़निश्चयी होता है।

शिवसंकल्पं हृदि धारयत- शिवसंकल्प(मंगल विचार) हृदय में धारण करो।

कलुषं स्वयं नशिष्यति रे- कलुषता स्वयं नष्ट हो जाएगी।

तिमिरं स्वयं गमिष्यति रे- अंधकार(**तिमिर**) अपने आप ही भाग जायेगा(दूर हो जायेगा)।

कहने का तात्पर्य यह है कि संकल्प कहीं भी कभी भी लिया जा सकता है। संकल्प का कोई विकल्प नही है। संकल्प लेना चाहिए या नही इसका कोई विकल्प नही है। अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिये संकल्प लिया जा सकता है। कल्याणकारी(शिवसंकल्प) विचारों को ही सदैव हृदय में धारण करना चाहिए जिससे कि हृदय की कलुषता(दूसरों के प्रति दुर्विचार) नष्ट हो जाए।

अंततः कहा जा सकता है कि व्यक्ति को अपने लक्ष्य पूर्ति हेतु अपने शुद्ध हृदय में संकल्प धारण करना चाहिये। इस प्रकार संकल्प धारण करने से व्यक्ति अपने मार्ग में आई बधाओं से डरता नही है अपितु डटकर सामना करता है। सम्पूर्ण मानव जाति को कवि हरिराम आचार्य का संदेश है कि एक बार दीपक जलाकर (मन में संकल्प दीपक जलाकर) देखो तो सही अंधकार(मन और मार्ग में आई बाधा रूपी अंधकार) स्वयं ही नष्ट हो जायेगा।